अवध के किसानों में राजनीतिक चेतना 1920–21 (फैजाबाद और प्रतापगढ़ के विशेष सन्दर्भ में)

डा० सुशील पाण्डेय

अवध में किसानों में राजनीतिक चेतना का विकास 1915 के वाद प्रारम्भ हुआ। अवध के किसान असंगठित थे और ताल्लुकेदारों के शोषण के शिकार थे। 1945 से पूर्व किसानों को संगठित करने का कोई भी संगठित प्रयास नहीं किया गया। 1945 के बाद होमरुल लीग के कार्यकर्ताओं ने किसानों को संगठित करने का प्रयास किया। लेकिन किसानों को राजनीतिक रुप से जागरुक बनाने और उन्हें भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन से जोड़ने का महत्वपूर्ण प्रयास बाबा रामचन्द्र ने किया।

जिस समय कांग्रेस गांधी जी के नेतृत्व में असहयोग आन्दोलन चला रही थी उससे पहले ही अवध में किसानों में नई जागृति के लक्षण प्रारम्भ हो गये थे। अवध के किसानों ने 1857 के विद्रोह में अंगेजी के विरुद्ध हथियार उठाने वालों का साथ दिया था। 1858 के बाद अंग्रेजों ने अवध में नई भूमि व्यवस्था लागू किया जिसका एक निश्चित उददेश्य था। अवध के तत्कालीन चीफ कमिश्नर ने भारत सरकार को पत्र लिखा–गदर में जिन लोगों ने हमारे विरुद्ध कार्यवाही करने में सहायता की है उनकी जमीन हमें अधिक से अधिक जब्त कर लेनी चाहिये। ये जमीन हम अपने सहायकों को उपहार में दे सकेंगे। ताल्लुका या तो उन्हें लोगों को मिलना चाहिये जिन्होंने हमारी सक्रिय सहायता की है या गदर में जिन्होंने भाग नहीं लिया है और जो अब हमारी मदद करने के लिये सदिच्छा रखते है।[1] इस नीति के अधीन जमीन का बन्दोबस्त करते समय ताल्लुकेदारों को जो सनद दी गई उसमें कहा गया – तुम्हें ब्रिटिश सरकार के प्रति वफादारी, विश्वास और राजभक्ति तथा उत्साह प्रत्येक स्थिति में प्रदर्शित करना होगा। वायसराय ने दरबार में ताल्लुकेदारों को सम्बोधित करते हुये कहा कि––सरकार को पिता के समान समझने की शिक्षा आप स्वयं ग्रहण करे और यही शिक्षा अपनी सन्तानों को भी दे।[2] अवध में 1856 के बाद ताल्लुकेदारों ने किसानों का अत्याधिक शोषण प्रारम्भ किया। सरकार को दी जाने वाली मालगुजारी का कई गुना लगान किसानों से लिया जाता था। इसके अतिरिक्त कई उपकरों की वसूली की जाती थी। पुत्र के जन्म पर, उसकी शिक्षा के नाम पर, कन्या के विवाह पर, कोई सवारी या हाथी खरीदने के लिये, प्रत्येक त्यौहार और समारोह के लिये किसानों पर ताल्लुकेदारों की ओर से प्रति परिवारकर निर्धारित कर दिया जाता था और ताल्लुकेदार अपने कारिंदों के माध्यम से इसे जबरदस्ती वसूल करता था। अवध में ताल्लुकेदार के रूप में एक ऐसे वर्ग का अस्तित्व था जिसका उत्पादन से कोई सम्बन्धन हीं था और वह अत्याचार के बल पर किसानों की कमाई को अपने पक्ष में कर लेता था। ताल्लुकेदार की इच्छा ही कानून थी। ताल्लुकेदार कभी भी किसान को जमींन से बेदखल कर देता था। ताल्लुकेदारों के कर्मचारी, साहूकार और विदेशी सरकार की पुलिस सभी किसानों के शत्रु थे। ताल्लुकेदार किसान को जमीन से बेदखलकर के उसकी जमीन नजराना लेकर दूसरों को दे देता था। यह नजराना उसकी आमदनी का एक बड़ा साधन था। इस कारण ताल्लुकेदार अधिक से अधिक किसानों को बेदखल करता था। किसानों को लगान की रसीद नहीं दी जाती थी।

इसलिये किसान के पास कोई भी प्रमाण नहीं होता था। इस प्रकार अवध के किसानों के अत्याचार और उत्पीड़न की सीमा पार हो चुकी थी और उनके भीतर का असन्तोष तेजी से सामने आने लगा। इस असन्तोष को प्रारम्भिक दिनों में बाबा रामचन्द्र नाम के व्यक्ति ने प्रारम्भ किया।[3]

बाबा रामचन्द्र मूलतः महाराष्ट्र के निवासी थे। इनका जन्म 1864 में बाम्बे प्रेसीडेन्सी के नीमच नामक स्थान में हुआ। इनका नाम श्रीधर बलवन्त जोधपुरकर था। 12 वर्ष की अवस्था में वे गिरमिटिया मजदूर के रूप में फिजी पहुँचे। फिजी में इन्होंने अपना नाम बदलकर रामचन्द्र राव रख लिया। इन्होंने फिजी में मजदूरों को धार्मिक चेतना के आधार पर राजनीतिक रूप में संगठित किया। फिजी में रामलीला का आयोजन प्रारम्भ करवाया और धार्मिक आधार पर भारतीय मजदूरों में राजनीतिक चेतना का विकास किया। इन्होंने इण्डिया और भारत मित्र समाचार पत्रों में भारतीय मजदूरों के पक्ष में लिखा। परिणामतः फिजी की सरकार ने इन्हें फिजी छोड़ने को बाध्य किया। 1916 में भारत वापस आने पर इन्होंने अयोध्या को अपना केन्द्र बनाया। 1920 तक अयोध्या में रहकर बाबा ने रामचरित मानस को आधार बनाकर राजनीतिक चेतना विकसित करने की कोशिश किया। 1920 में बाबा ने प्रतापगढ़ के रूर गाँव को अपना मुख्यालय बनाया।[4] बाबा का कहना था कि तुलसीदास ने रामचरित मानस में "राज समाज विराजत रूरे" का वर्णन किया है, इसी आधार पर बाबा ने रूर को अपना मुख्यालय बनाया। बाबा ने पिछड़ी कुर्मी जाति की महिला से विवाह किया और स्वयं को किसान नेता के रूप के रूप में प्रस्तुत किया। रूर में स्थानीय नेताओं झिंगुरी सिंह और दुर्गपाल सिंह के सहयोग से बाबा ने किसानों को तेजी से संगठित किया। सबसे पहले बाबा ने पट्टी तहसील में शोषक वर्ग का सामाजिक बहिष्कार प्रारम्भ करवाया। जनवरी 1920 में शोषको के लिये नाई–धोबी बन्द आन्दोलन चलाया। बाबा ने अवधी भाषा पर पूरा अधिकार प्राप्त करने के बाद लोगों को रामकथा सुनाना प्रारम्भ किया। बाबा का मूलमन्त्र था– "जासुराज प्रिय प्रजा दुखारी सो नृप अवसी नरक अधिकारी" इस चौपाई की व्याख्या बाबा ने अपने ढंग से लोगों को उनकी दयनीय दशा से अवगत कराने में किया। संगठन की अद्भुत शक्ति का परिचय बाबा ने गुहार लगाने की नई पद्धति अपनाकर दिया। बाबा ने जय–जय सीताराम का उद्घोष प्रारम्भ किया। अगर किसी व्यक्ति पर ताल्लुकेदार कर्मचारी अत्याचार करते थे तो वह व्यक्ति और उसेक गाँव वाले जय–जय सीताराम का नारा लगाते थे। इसे सुनकर दूसरे गाँव के लोग भी वही नारा लगाकर पीड़ित व्यक्ति के पास पहुँच जाते थे और देखते–देखते भारी भीड़ इकट्ठा हो जाती थी। बाबा ने हिन्दु–मुसलमान किसानो की एकता पर अधिक जोर दिया। 10 जून 1920 को बाबा जौनपुर और प्रतापगढ़ के किसानों का नेतृत्व करते हुये इलाहाबाद पहुँचे और जवाहरलाल नेहरू से आन्दोलन का नेतृत्व संभालने का अनुरोध किया। इनके आग्रह पर जवाहरलाल नेहरू ने जून और अगस्त में कई बार ग्रामीण क्षेत्रों का दौरा किया। स्वयं जवाहरलाल नेहरू ने कहा कि बाबा रामचन्द्र में संगठन की अद्भुत क्षमता है, उनकी आवाज पर लोग पानी की धारा की तरह दौड़ते हुये चले आते हैं।[5] इसी बीच प्रतापगढ़ के किसानों को वी. एन. मेहता नाम का एक उदार अधिकारी मिल गया। मेहता प्रतापगढ़ जिले के डिप्टी कमिश्नर थे। 11 नवम्बर 1920 को मेहता ने अपनी रिपोर्ट मे सरकार से किसानों के पक्ष में कुछ सिफारिशें किया लेकिन अगस्त 1920 में मेहता छुट्टी पर चले गये थे। ताल्लुकेदारों के लिये यह एक सुअवसर था। 28 अगस्त 1920 को चोरी के झूठे आरोप में बाबा रामचन्द्र और 32 किसानों को गिरफ्तार किया गया। पाँच हजार किसान बाबा से जेल मिलने पहुँचे। 5 सितम्बर को यह अफवाह फैली कि बाबा को छुड़ाने के लिये गांधीजी प्रतापगढ़ आ रह हैं। लगभग 50 हजार किसान

बाबा को देखने प्रतापगढ़ आ गये लेकिन बाबा के रिहा न होने पर किसान सई नदी के किनारे अगले दिन तक इंतजार करते रहे।[6] सरकार इस स्थिति से बुरी तरह घबरा गई। मेहता की छुट्टी से वापस बुलाया गया। मेहता ने चोरी का मामला समाप्त करके किसानों को कुछ और भी राहत दिया। यह किसानों की छोटी लेकिन महत्वपूर्ण जीत थी। अक्टूबर 1920 के अन्त तक बाबा ने 330 किसान सभाओं का गठन कर दिया था। बाबा के प्रयास से 17 अक्टूबर 1920 को रुर में अवध किसान सभा का गठन किया गया। बाबा ने किसानों से बेदखली जमीन में जोतने और बेगार न करने की अपील किया। इसे न मानने वालों के सामाजिक बहिष्कार की अपील की गई। किसानों से कहा गया कि वे अपने मामलों का निपटारा पंचायतों के माध्यम से करें। 20 और 21 दिसम्बर को बाबा ने अयोध्या में विशाल रैली किया जिसमें लगभग 1 लाख किसानों ने भाग लिया। इस रैली में बाबा रस्सी से बधे हुये आये क्योंकि वह यह दिखाना चाहते थे कि आज किसानों की यही स्थिति है। इस रैली में सभी जाति और धर्म के किसानों ने हिस्सा लिया। बाबा रामचन्द्र अब तेजी से लोकनायक बन गये। पट्टी तहसील में आम जनता ने "बाबा रामचन्द्र के रजवा परजा मजा उड़ावे ना" जैसे लोकगीत की रचना किया. कांग्रेस के नेतृत्व में जो आन्दोलन चल रहा था उससे इसका कोई सम्बन्ध नहीं था। शहर के बुद्धिजीवी वर्ग और राजनीतिक कार्यकर्ताओं को इस किसान आन्दोलन की कोई जानकारी नहीं थी। बाबा के प्रयासों का दो महत्वपूर्ण परिणाम सामने आया। देश के नेताओं का ध्यान किसानों की दयनीय दशा की ओर आकृष्ट हुआ और कांग्रेस में उनकी समस्या की गम्भीरता अनुभव की गई। दूसरी और इस विशाल जनशक्ति ने कांग्रेस के झंडे के नीचे खड़े होकर उसके आन्दोलन को व्यापक जनाधार प्रदान किया। अब यह किसान आन्दोलन कांग्रेस के राष्ट्रीय आन्दोलन की मुख्य धारा का अंग बन गया। इस किसान जागृति से ताल्लुकेदार और सरकार दोनों चितिंत हुये और अब सरकार ने किसानों का दमन करना प्रारम्भ कर दिया लेकिन अब किसानों का उत्साह बहुत बढ़ गया और अब किसान इसे अपने संगठन शक्ति की विजय समझने लगे।

जनवरी 1921 के प्रारम्भ में इस आन्दोलन में व्यापक बदलाव आया। अब बाबा ने किसानों से संगठित प्रतिरोध करने की अपील किया। रायबरेली, फैजाबाद और सुल्तानपुर जिलों में किसानों ने ताल्लुकेदारों के घरों और बाजारों में लूटपाट आरम्भ कर दिया। 6 जनवरी 1921 को फुरसतगंज में 10 हजार लोगों की भीड़ ने ताल्लुकेदारों के घरों पर आक्रमण कर दिया। मुंशीगंज में 7 जनवरी 1921 को किसानों ने अपने नेताओं की गिरफ्तारी के विरोध में मजिस्ट्रेट का घेराव किया। सरकार ने गोली चलवा दिया, परिणामतः इस गोलीकाण्ड में 12 लोग मारे गये।[7] बाबा रामचन्द्र ने इस घटना के विरोध में किसानों को तेजी से संगठित करना प्रारम्भ किया। रायबरेली और फैजाबाद में बड़े पैमाने पर किसान गिरफ्तार किये गये। प्रतापगढ़ जिले में 6 नवयुवक विद्यार्थी पर्चा बांटने के आरोप में जेल भेजे गये। प्रताप नामक समाचार पत्र में बाबा द्वारा लिखने के आरोप में सरकार ने गणेश शंकर विद्यार्थी पर जुर्माना लगया। 10 फरवरी 1921 को काशी विद्यापीठ के उद्घाटन के अवसर पर बाबा रामचन्द्र को बनारस में गिरफ्तार किया गया। बाराबंकी के जिलाधिकारी ने कहा कि बाबा को बाराबंकी में किसानों को भड़काने के आरोप में गिरफ्तार किया जा रहा है, इसके पूर्व 14 जनवरी 1921 को लखनऊ के कमिशनर जे. सी. फाउन्थोरपे ने मुख्य सचिव को पत्र लिखा ."अवध में असन्तोष के लिये मुख्यतः बाबा रामचन्द्र जिम्मेदार है, बिना इसको गिरफ्तार किये अवध में शान्ति नहीं आ सकती।[8] बाबा को गिरफ्तार करके 6 वर्ष की सजा दी गई लेकिन बाबा द्वारा खड़ा किया गया आन्दोलन कांग्रेस के आन्दोलन का सामाजिक आधार बना और अवध का किसान कृ

षक हितों के साथ–साथ राष्ट्रीय मुद्दों से भी जुड़ा। सरकार ने मार्च 1921 में अवध रेन्ट एक्ट पास जिसमें ताल्लुकेदारों को निर्देश दिया गया कि वे किसानों को 7 वर्षीय पट्टे के स्थान पर आजीवन कास्तकारी का अधिकार दें।[9] इस प्रकार आन्दोलन परिणाम के साथ समाप्त हुआ।

बाबा रामचन्द्र ने किसानों की चेतना को जागृत करने और उनकी समस्याओं को सुलझाने में कई विधियों का प्रयोग किया। प्रारम्भ में बाबा ने धार्मिक चेतना और धार्मिक आग्रह को आधार बनाया। इसके बाद उन्होंने गांधीवादी अहिंसात्मक क्रान्ति का सहारा लिया।[10] जैसे–जैसे किसानों में जागृति बढ़ती गई, बाबा का झुकाव वामपंथी विचारधारा की ओर बढ़ने लगा। फरवरी 1921 में बाबा ने लेनिन को किसानों का प्रिय नेता बताया और 23 नवम्बर 1925 को हिन्दी दैनिक प्रताप में लेख लिखा ."रूस के अतिरिक्त किसान अब भी सर्वत्र दास हैं। अब किसानों को रूस की क्रान्ति से प्रेरणा लेकर आन्दोलन प्रारम्भ करने की आवश्यकता है।" बाबा रामचन्द्र का आग्रह अवश्य धार्मिक था लेकिन बाबा ने किसानों को धर्मनिरपेक्ष मुद्दे पर संगठित किया। बाबा ने 10 जनवरी 1920 में 500 किसानों के साथ गोरखपुर से इलाहाबाद का मार्च प्रारम्भ किया। इसका उद्देश्य सप्तमी के दिन प्रयाग में स्नान करना था। बाबा के मार्च में हिन्दू और मुसलमान दोनों ही बड़ी संख्या में शामिल हुये। बाबा ने नजराना और बेगार जैसी प्रथा के खिलाफ किसानों को धार्मिक शपथ दिलाई वहीं किसानों को स्वदेशी और असहयोग का भी संकल्प दिलाया।[11] बाबा रामचन्द्र का आन्दोलन किसान आन्दोलनों में अग्रणी आन्दोलन है और कई अर्थों में अनूठा आन्दोलन भी है।

सन्दर्भ

1. दैनिक प्रताप
2. संयुक्त प्रांत सरकार की जमींदारी उन्मूलन समिति की रिपोर्ट, खण्ड–1, पृष्ठ–105 से 114
3. उत्तर प्रदेश सरकार, स्वतंत्रता सैनिक(प्रतापगढ़)
4. उत्तर प्रदेश सरकार, स्वतंत्रता सैनिक(रायबरेली)
5. नेहरू जी - मेरी कहानी - पृष्ठ–71,72
6. यू. पी. आर्काइव फाइल - 50–3–1921
7. यू. पी. आर्काइव फाइल - कमिश्नर ऑफ फैजाबाद, सर हरकोर्ट बटलर रिपोर्ट
8. वी. एन. मेहता रिपोर्ट - 11 नवम्बर 1920 टू फैजाबाद कमिशनर
9. एम. एच. सिद्दीकी - एग्रेरियन अनरेस्ट इन नार्थ इण्डिया
10. के. कुमार . पीजेन्ट्स इन रेवोल्टी - टेनैन्ट्स, लैन्डलार्डस, कांग्रेस एण्ड द् राज इन अवध
11. ज्ञान पाण्डेय . पीजेन्ट रिवोल्ट एण्ड इंडियन नेशनलिज्म - द् पीजेन्ट मूमेन्ट इन अवध– 1919–1922

Copyright © 2015 Dr. Susheel Pandey. This is an open access refereed article distributed under the Creative Common Attribution License which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.